अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । शुक्रवार, 12 अप्रैल 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

लोकतंत्र में बदलाव लाने का एकमात्र रास्ता है वयस्क नागरिकों द्वारा मतदान...
- क्रिस्टिन टॉड ह्विटमैन

अमेरिकी राजनेता व लेखिका

पहले चरण में हुए मतदान के साथ ही देश में सारी ईवीएम के साथ वीवीपैट के इस्तेमाल की शुरुआत भी हो गई है, यह भारत की निर्वाचन प्रक्रिया में एक और मील का पत्थर है।

सत्रहवीं लोकसभा की दौड़

पहले चरण में बीस राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 91 सीटों पर मतदान संपन्न होने के साथ ही सत्रहवीं लोकसभा के लिए सात चरणों वाली मतदान प्रक्रिया शुरू हो गई है। आम चुनाव के लिए सियासी पारा तो पहले ही ऊपर चढ़ गया था, मगर तेज गर्मी के बावजूद पहले चरण में कुछ जगहों को छोड़कर मतदाताओं ने जिस तरह का उत्साह दिखाया है, वह इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर बढ़ते विश्वास की ही पुष्टि करता है। इस चुनाव में जहां तक मुद्दों की बात है, तो भाजपा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कामकाज के साथ ही उनकी छवि और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर चुनाव लड़ रही है, वहीं कांग्रेस गरीबों के लिए अपनी न्याय योजना को नारे में तब्दील करती दिख रही है, लेकिन क्षेत्रीय दलों के अपने मुद्दे हैं, जिनका असर उनके प्रभाव वाले क्षेत्रों में है। वास्तव में 90 करोड़ मतदाता, आठ लाख मतदान केंद्र और 1.1 करोड़ निर्वाचन कर्मचारी, ये सब हमारे लोकतंत्र की मजबूती को ही दिखाते हैं। इस चरण में हुए मतदान के साथ ही देश में सारी ईवीएम के साथ वीवीपैट के इस्तेमाल की शुरुआत भी हो गई है, यह भारत की निर्वाचन प्रक्रिया में एक और मील का पत्थर तो है ही, इससे निर्वाचन की निष्पक्षता को मजबूती मिलेगी। निश्चित रूप से पहले की तुलना में चुनावी हिंसा में कमी आई है, मगर, प्रथम चरण के मतदान से पहले बस्तर में जिस तरह से माओवादी हिंसा में एक भाजपा विधायक और चार सुरक्षा कर्मियों की मौत हुई, उससे पता चलता है कि निर्वाचन आयोग के लिए नक्सल और दुर्गम क्षेत्रों में चुनाव करवाना आज भी कितना जोखिम भरा काम है। यही नहीं, पहले चरण में ही 17 फीसदी ऐसे उम्मीदवार हैं, जिनके खिलाफ किसी न किसी तरह के आपराधिक मामले दर्ज हैं। वहीं 32 फीसदी उम्मीदवार करोड़पति हैं, जिससे पता चलता है कि चुनावी राजनीति आम राजनीतिक कार्यकर्ताओं से कितनी दूर होती जा रही है। यह सबको पता है कि चुनावों में सर्वाधिक काला धन इस्तेमाल होता है, लेकिन उस पर अंकुश नहीं लगाया जा सका है। हैरत नहीं होनी चाहिए कि निर्वाचन आयोग अब तक 473 करोड़ रुपये और 400 करोड़ रुपये का सोना जब्त कर चुका है। जाहिर है, राजनीतिक सुधार के बिना इन बुराइयों को खत्म नहीं किया जा सकता और इसमें देश के करोड़ों मतदाताओं की भूमिका अहम हो सकती है।

भारत के चुनाव और पाकिस्तान

भारत के नब्बे करोड़ मतदाताओं ने लोकसभा चुनाव के लिए अपने मताधिकार का प्रयोग करना शुरू कर दिया है। भारतीय लोकतंत्र की चुनावी प्रक्रिया बेहद लंबी है, जो न केवल बेहद आश्चर्यजनक है, बल्कि उसके पड़ोसियों को यह अविश्वसनीय भी लगता है। पाकिस्तान के आम लोगों का मानना है कि भारतीय जनता पार्टी के नरेंद्र मोदी के पास सत्ता में वापसी का एक अच्छा मौका है, जबकि कांग्रेस के पास पिछले लोकसभा चुनाव के मुकाबले अपनी सीटों की संख्या बढ़ाने का एक अच्छा अवसर है। कुछ विश्लेषकों का कहना है कि भाजपा को संभवतः कुछ सीटों का नुकसान होगा और वह केंद्र में गठबंधन की सरकार बनाएगी।

लेकिन सात चरणों की लंबी मतदान प्रक्रिया के बाद ईवीएम से क्या नतीजा निकलेगा, यह गोपनीय है, क्योंकि कोई भी यह भविष्यवाणी नहीं कर सकता कि भारतीय मतदाता किस तरह से मतदान करेंगे। मान लीजिए कि मतदाताओं ने इस बार भाजपा को कम वोट दिए और कुछ अन्य पार्टियां लोकसभा चुनाव जीत गईं, तो इससे इमरान खान के लिए मुश्किलें पैदा होंगी, जिन्हें कूटनीति का सबक लेने की जरूरत है।

अब जब भारत में पहले चरण का मतदान हो चुका है, पाकिस्तान में इमरान खान की इस वजह से भारी आलोचना हो रही है, क्योंकि उन्होंने सार्वजनिक रूप से यह कह दिया कि भारत में नई सरकार बनाने के लिए मोदी चुनाव जीतेंगे। यानी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री पूरी तरह आश्वस्त हैं कि नरेंद्र मोदी अगली सरकार बनाएंगे। हो सकता है कि उन्हें ऐसा बताया गया हो। पाकिस्तान में कुछ लोग यह कहते हुए उनकी आलोचना कर रहे हैं कि जब भारत में चुनाव हो रहे हैं, तब उनका इस तरह का बयान देना बचकाना है। आलोचक यह भी कह रहे हैं कि बेहद संवेदनशील स्थिति होने के दौरान इमरान खान को अपने पड़ोसी के बारे में बोलना बंद कर देना चाहिए। इस्लामाबाद में कुछ लोग हंसते हुए यह भी कह रहे हैं कि अब नरेंद्र मोदी को अपने मतदाताओं से कहना चाहिए कि उनकी पाकिस्तान नीति इतनी सफल रही है कि वहां के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि मैं फिर से नई सरकार बनाऊं।

इमरान खान ने कहा कि अगर नरेंद्र मोदी लोकसभा चुनाव जीतते हैं, तो भारत के साथ शांति वार्ता करने की अच्छी संभावना हो सकती है। वह कहते हैं, 'अगर भारत में अगली सरकार विपक्षी कांग्रेस के नेतृत्व में बनती है, तो कश्मीर मामले में पाकिस्तान के साथ समझौता न होने की आशंका ही ज्यादा है, क्योंकि वैसी स्थिति में वहां के दक्षिणपंथी उसका तीखा विरोध करेंगे। लेकिन इसके विपरीत अगर दक्षिणपंथी पार्टी भाजपा चुनाव जीतती है, तो कश्मीर मसले पर समझौता हो सकता है।'

इससे पहले भी इमरान खान की आलोचना हुई थी, जब उन्होंने दो बार यह सुझाव देकर अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी को नाराज कर दिया था कि आम चुनाव से पहले काबुल में एक अंतरिम सरकार होनी चाहिए। पाकिस्तान के विपरीत अफगानिस्तान और भारत के संविधानों में अंतरिम सरकार का कोई प्रावधान नहीं है।

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) की वरिष्ठ उपाध्यक्ष और सांसद शेरी रहमान भी इमरान खान की आलोचना करते हुए कहती हैं, 'जब एक देश में चुनाव हो रहे हैं, तब दूसरे देश के प्रधानमंत्री द्वारा किसी व्यक्ति (मोदी) को वार्ता के मामले में वरीयता देना अनुचित है। पाकिस्तान देशों के साथ संबंध रखता है, व्यक्तियों के साथ नहीं। यह कहना, कि मोदी हमें अपनी बात रखने का बेहतर मौका देंगे, भारत में दूसरों के लिए दरवाजे बंद करना है।'

अंग्रेजी दैनिक द *डॉन* ने इमरान खान पर टिप्पणी करते हुए अपने संपादकीय में लिखा है कि एक दक्षिणपंथी पार्टी के साथ समझौते की संभावना का प्रधानमंत्री का विचार संभवतः भाजपा के साथ पाकिस्तानियों के पूर्व अनुभव पर आधारित रहे हों, जिसमें तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 1999 की लाहौर यात्रा भी शामिल है। फिर 2001 में दक्षिणपंथी भाजपा और पाकिस्तान के सैन्य राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ आगरा में समझौते के करीब पहुंच गए थे, लेकिन कश्मीर विवाद के शांतिपूर्ण समाधान की उम्मीदें विफल हो गई थीं। *डॉन* लिखता है कि 'यह बहुत ही नाजुक क्षण है और पाकिस्तान का न तो अफगानिस्तान के साथ और न ही भारत के साथ बेहतर रिश्ता है, दोनों अनिश्चितता में फंसे हैं। ऐसे में हमारे यहां शिखर पर बैठे शख्स से परिपक्व दृष्टिकोण की अपेक्षा है।'

पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी कहते हैं कि भारत और पाकिस्तान, दोनों पर इस बात की भारी जिम्मेदारी है कि वे इस क्षेत्र में रणनीतिक स्थिरता के समक्ष आने वाली चुनौतियों से निपटने की दिशा में काम करें। वह कहते हैं कि 'समृद्ध समाजों के निर्माण के लिए एक शांतिपूर्ण पड़ोस अनिवार्य शर्त है।'

चुनावों के बाद पाकिस्तान और भारत के द्विपक्षीय संबंधों के भविष्य की ओर देखते हुए मानवाधिकार मंत्री डॉ शिरीन मजारी कहती हैं कि मुद्दा संकट के प्रबंधन का नहीं हैं। हमें मूल रूप से बातचीत शुरू करने और मौजूदा संघर्षों को हल करने की आवश्यकता है। पाकिस्तान ने हमेशा कहा है कि बातचीत से विवाद का समाधान होना चाहिए।

पाकिस्तान में कुछ लोग कश्मीर के भविष्य को लेकर भी चिंतित हैं, क्योंकि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि यदि भाजपा सरकार फिर से चुनाव जीतकर सत्ता में आती है, तो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 को खत्म कर दिया जाएगा, जो कश्मीर को विशेष दर्जा प्रदान करता है।

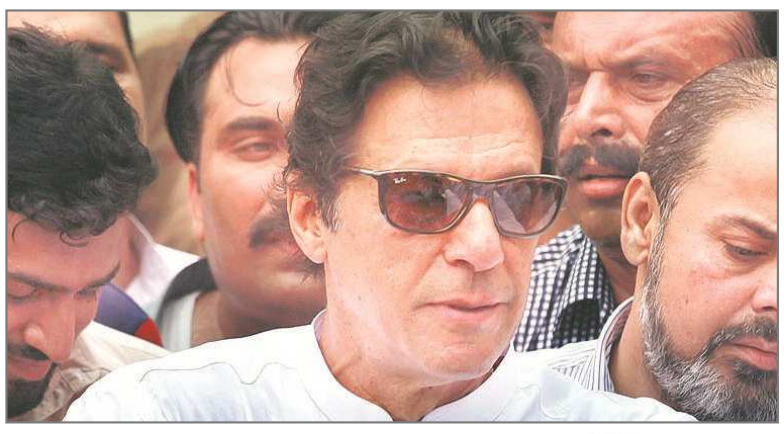

भारत की लंबी चुनावी प्रक्रिया पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों के लिए आश्चर्यजनक है। पाकिस्तान में माना जा रहा है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सत्ता में वापसी करेगी, जबकि कांग्रेस की सीटों की संख्या में भी वृद्धि होगी।

मरिआना बाबर, पाकिस्तानी पत्रकार

अंतर्ध्वनि

>> फ्रांज फेनन

राष्ट्रीय चेतना ही अंतरराष्ट्रीय चेतना को पालती-पोसती है

यह समय कुछ दिखावटी नैतिक आचरणों को अपदस्थ करने का है। मानवता के पीछे छूट जाने के दावे खुद पीछे छूट गए हैं। यह समय अधिक संगठित तौर पर काम करने का है। पिछड़े दिमागवाले राष्ट्रवादियों के लिए यह समय बीती गलतियों से सबक लेने का है। हालांकि हमें पता है कि चूकें राष्ट्रीय समय की मिथ्या एवं गलत पड़ताल से पैदा होती हैं। स्वत्व की चेतना का अर्थ संवादहीनता नहीं होता। जबकि इसके उलट, दार्शनिक विचार तो हमें यह बतलाते हैं कि स्वत्व की चेतना संवाद की गारंटी है। राष्ट्रीय चेतना (जो राष्ट्रवाद से अलग है) ही एकमात्र तत्व है, जो हमें अंतरराष्ट्रीय आयाम दे सकती है। राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय संस्कृति का यह संबंध अफ्रीका को एक विशेष परिप्रेक्ष्य देता है। असल में अफ्रीका में राष्ट्रीय चेतना का जन्म, अफ्रीकी चेतना के समकालिक संबंधों के साथ जुड़ा है। एक अफ्रीकी के लिए राष्ट्रीय संस्कृति के सम्मान की भावना अफ्रीकी-नीग्रो संस्कृति की सम्मान भावना के साथ भी जुड़ती है। यदि मनुष्य अपने आचरण से जाना जाता है, तो हम कहेंगे कि एक बुद्धिजीवी के लिए सबसे आवश्यक काम यह है कि वह राष्ट्र के निर्माण में केंद्रीय भूमिका अदा करे। यदि यह निर्माण वास्तविक होता है, मतलब कि जन-भावनाओं को समझने और विवेचित करने में सक्षम और जन-मानस की वास्तविकता को उभारने वाला, तो इस आवश्यक परिणाम से पैदा हुए राष्ट्र का निर्माण, सर्वव्यापी मूल्यों को प्रोत्साहन देने वाला होगा। अन्य देशों से अलग-थलग न पड़कर मिलने वाली यह आजादी, राष्ट्र को इतिहास के मंच पर अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती है। यह राष्ट्रीय चेतना की भावना ही अंतरराष्ट्रीय चेतना को पालती-पोसती है। यह दोहरा दृष्टिकोण ही सभी संस्कृतियों का मूल है।

-फ्रांस के क्रांतिकारी दार्शनिक

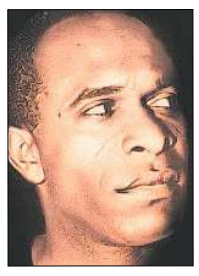

मंजिलें और भी हैं

>> सीमा वाघमोड़े

हजारों महिलाओं और बच्चों की जिंदगी बदली

मैं मुंबई में पैदा हुई। पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं सामाजिक काम में लग गई, क्योंकि इस काम में बचपन से ही मुझे रुचि थी। मुंबई में ही कुछ साल तक मैं कुष्ठ रोगियों की सेवा और उनके पुनर्वास के काम में लगी रही। मुंबई से मैं पति का ट्रांसफर होने के कारण पुणे गई, तो कुछ समय तक मेरे पास करने के लिए कुछ काम नहीं था। लेकिन चूंकि पुणे में मेरा बचपन गुजरा था, इसलिए कुछ दिनों तक शहर में घूमते हुए मैं पुरानी यादें ताजा करती रहीं। वहां रहते हुए एक दिन मैंने बुधवार पेठ में, जो कि रेड लाइट एरिया भी है, एक ऐसा दृश्य देखा, जिसने मेरे भविष्य की रूपरेखा तय कर दी। मैंने देखा कि एक बच्चा, जो बेहद भूखा था, अपनी मां से जल्दी ही एक ग्राहक पकड़ लेने की जिद कर रहा था। पूरा माजरा समझने पर मेरा सिर घूम गया। वह मेरे लिए एक स्तब्ध कर देने वाला अनुभव था। मुझे पुराने दिन याद आ गए, जब बुधवार पेठ से गुजरते हुए मेरे पिता मेरा हाथ कसकर पकड़ लेते थे। मैं बुधवार पेठ और यहां रह रही महिलाओं की पहचान बदल देना चाहती थी।

हमारी संस्था कायाकल्प ने करीब 10,000 यौनकर्मियों को नवजीवन दिया है।

उसी दौरान मैंने कुछ यौनकर्मियों से बातचीत की, तो स्पष्ट हुआ कि उनमें से ज्यादातर धोखे से वहां लाई गई हैं और मजबूरी में यह काम कर रही हैं, क्योंकि वे पढ़ी-लिखी नहीं हैं, और उन्हें दूसरा कोई काम आता नहीं है। मैं इस क्षेत्र में काम करना चाहती थी, लेकिन इसके लिए पति से अनुमति लेना आवश्यक था। उन्होंने मुझे कहा कि यह बहुत चुनौतीपूर्ण काम है, और अगर मैं इस क्षेत्र में कुछ सार्थक करना चाहती हूं, तो पूरे समर्पण के साथ करना होगा। मैंने हामी भरी और इस तरह एक नया सफर शुरू हुआ। संयोग से उसी समय मैंने एचआईवी/एड्स के मुद्दे पर जन जागरूकता पैदा करने से संबंधित सरकार की एक शोध परियोजना से जुड़ गई, जिसका मुझे लाभ ही हुआ। मैंने अपनी तरह की सोच वाले कुछ लोगों को जोड़ा और 'कायाकल्प' नाम की एक संस्था बनाई, जिसका लक्ष्य यौनकर्मियों को नए पेशे और नए जीवन से जोड़ना था। हालांकि मेरे कुछ परिचितों को जब मेरी योजना के बारे में मालूम चला, तो उन्होंने मुझे हतोत्साहित करना शुरू किया कि मैं जो कर रही हूं, वह ठीक नहीं है। लेकिन इससे मेरा उत्साह कम नहीं हुआ। हालांकि शुरुआत में अपने काम में मुझे सफलता नहीं मिली। एक-दो यौनकर्मी मुझसे बात तो कर लेती थीं, पर कोई अपने कमरे में मुझे घुसने नहीं देना चाहती थीं। पर उनका जीवन बदलने का मेरा लक्ष्य अटल था। विगत 26 साल में हमारी संस्था कायाकल्प ने करीब 10,000 यौनकर्मियों को बुधवार पेठ से हटाकर नवजीवन दिया है। शिक्षा और कौशल विकास के कारण वे आज दूसरा काम करती हैं और समाज में सम्मान के साथ रहती हैं। वर्ष 2008 से हमें बिल और मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन की भी मदद मिल रही है, जिससे हमारा काम आसान हो गया है। तीन साल पहले हमने पुणे से 120 किलोमीटर दूर बोरी गांव में जमीन खरीदकर एक पुनर्वास केंद्र की स्थापना की, जिनमें यौनकर्मियों के बच्चों को रखा गया। वहां उनकी पढ़ाई की भी व्यवस्था है। फिलहाल इस पुनर्वास केंद्र में 35 बच्चे रहते हैं। हमारा लक्ष्य वर्ष 2020 तक इसमें 100 बच्चों को रखने का है। मेरा मानना है कि महिलाओं के शोषण की मुख्य वजह समाज और सरकारों की उदासीनता ही है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

आधी आबादी के वोट की कीमत

केरल के एक गरीब आदिवासी परिवार की बेटी, श्रीधान्या, ने आईएएस की परीक्षा पास की ! जहां सरकार चलाने वाले महिलाओं के प्रति संवेदनशील हैं, वहां महिलाएं क्या नहीं कर सकतीं ! पर देश के अधिकतर हिस्सों में ऐसी संवेदनशीलता कहां है?

महिलाएं आबादी का आधा हिस्सा ही नहीं, मतदाताओं का आधे से अधिक हिस्सा हैं। और तमाम सर्वेक्षण बताते हैं कि वे अपना वोट अपने घर वालों की मर्जी के खिलाफ भी देने लगी हैं। अक्सर वे निवर्तमान सरकार के खिलाफ अपना गुस्सा व्यक्त करते हुए वोट करती हैं। लेकिन, अब भी, उनके मुद्दे, उनकी मांगें और उनके अधिकारों की बात बड़े दलों की घोषणाओं और उनके नेताओं के भाषणों से गायब ही हैं। इस स्थिति के खिलाफ अब महिलाओं का गुस्सा जगह-जगह फूटने लगा है।

पिछले दिनों में ही कुछ उदाहरण सामने आए हैं। बेरोजगारी और कृषि संकट का कितना भयावह असर महिलाओं के जीवन पर पड़ता है, इसका अंदाजा ही लोगों को नहीं है। विलायत के एक अखबार में दस दिन पहले ही एक कहानी छपी थी। पुष्पा की कहानी। वह तमिलनाडु की 30 वर्षीय महिला है, जो आयात के लिए काजू छीलने का काम करती है। उसे 200 रुपये रोज मिलते हैं। काजू छीलने का काम पूरे हाथ को जला देता है और हाथों में फुंसियां निकल आती हैं। काजू को बहुत ही तेज धार की मशीन में काटना पड़ता है और इससे, अक्सर, महिला मजदूरों की उंगलियां कट जाती हैं। पुष्पा की एक उंगली का ऊपर का हिस्सा कट चुका है। हाथों में जलन और फुंसियों के कारण जब पुष्प खाना बनाने के लिए प्याज या मिर्च काटती है, तो दर्द असहनीय हो जाता है। इसी रिपोर्ट में इस बात का जिक्र है कि केरल में सरकार की सख्ती के कारण, काजू छीलने वाली महिलाओं के लिए सुरक्षा-दस्ताने उपलब्ध कराए जाते हैं और उनको न्यूनतम वेतन (रोज के 800 रुपये और उससे अधिक) देना पड़ता है। इसकी वजह से केरल में छिले काजू कुछ महंगे हो जाते हैं, लेकिन वे कंपनियां जो नैतिक मूल्यों पर जोर देने लगी हैं, वे केरल से ही काजू खरीदती हैं।

सुभाषिनी सहगल अली

दूसरी रिपोर्ट जो महाराष्ट्र से आई है, वह तो और भी भयानक है। महाराष्ट्र का बड़ा हिस्सा सूखा-पीड़ित है। इन इलाकों की महिलाओं को अपने परिवारों के साथ गन्ने के खेतों में काम करने के लिए पलायन करना पड़ता है। हाड़-तोड़ मेहनत तो करनी ही पड़ती है। लैंगिक हिंसा का सामना भी करना पड़ता है। और अब यह जानकारी मिली है कि इनमें से अधिकतर महिलाओं, जिनमें बहुत कम उम्र की महिलाएं भी शामिल हैं, का गर्भाशय उनके शरीर से निकाल दिया गया है। काम कराने वाले ठेकेदार कहते हैं कि वह महिलाओं को गर्भाशय निकालने के ऑपरेशन के लिए इसलिए मजबूर करते हैं कि माहवारी के दौरान उनकी काम करने की क्षमता कम हो जाती है। ऑपरेशन के लिए वे महिलाओं को एडवांस पैसे देते हैं, जो वे मजदूरी से काट भी लेते हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले तमाम विपरीत प्रभाव से ठेकेदारों को क्या लेना-देना?

इन्हीं खबरों के बीच, केरल से चौंकाने वाली, खुश करने वाली खबर आई। एक गरीब आदिवासी परिवार की बेटी, श्रीधान्या, ने आईएएस की परीक्षा पास कर ली! उसके मां-बाप मनरेगा मजदूर हैं और बेटी को पढ़ाना उनके बस में नहीं था। श्रीधान्या ने परीक्षा में पास होने के बाद एक समाचार पत्र को बड़े ही सहज भाव में बताया कि चूंकि सरकारी स्कूलों में निःशुल्क और अच्छी शिक्षा मिलती है और सरकार एससी/एसटी छात्र-छात्राओं के लिए कोचिंग का इंतजाम करती है, इसलिए वह परीक्षा की तैयारी करके पास होने के अपने सपने को साकार कर पाई। श्रीधान्या वायनाड की रहने वाली है। उसी वायनाड में चुनाव लड़ने अमेठी के सांसद आ रहे हैं। अमेठी में 50 फीसदी महिलाएं अपना नाम ही लिख सकती हैं और 48 फीसदी बच्चे कुपोषण के शिकार हैं! जहां सरकार चलाने वाले महिलाओं के प्रति संवेदनशील हैं, वहां महिलाएं क्या नहीं कर सकतीं! लेकिन, देश के अधिकतर हिस्सों में इस तरह की संवेदनशीलता कहां देखने को मिलती है?

हरियाली और रास्ता

राम, पार्क और तितली

एक नन्ही सी तितली की कहानी, जिसके साहस से प्रभावित होकर राम ने अपना रास्ता बदल लिया।

उस दिन राम दफ्तर से जल्दी निकल गया था। कुछ देर पहले ही बारिश हुई थी। ठंडी हवा मन को बहुत सुहा रही थी। पास में ही एक नया पार्क, 'गुलाब वाटिका' बना था। उस दिन राम के कदम खुद-ब-खुद पार्क की तरफ बढ़ चले। पार्क में पैदल चलने वालों के लिए बढ़िया मार्ग बना था। बीच-बीच में आराम करने के लिए कुर्सियां, बच्चों के खेलने के लिए झूले, सुंदर फूल और वृक्ष लगाए गए थे। पार्क में मिट्टी का एक ढेर पड़ा था, जो बारिश की वजह से कीचड़ में तब्दील हो गया था। वह बाईं तरफ से कीचड़ से बचते-बचाते निकल ही रहा था कि उस पर हमला हो गया। पहला हमला, फिर दूसरा, फिर तीसरा, ऐसा लगातार होता रहा। इस हमले में उसे कोई चोट नहीं लग रही थी, न कपड़े गंदे हो रहे थे, सिर्फ हंसी आ रही थी। एक छोटी-सी तितली उसके ऊपर बार-बार अपनी पूरी ताकत से आकर टकरा रही थी। राम पीछे हट गया, तो तितली शांत हो गई। पर जैसे ही उसने आगे बढ़ने का प्रयास किया, तितली फिर हमला करने लगी। जैसे ही उसने दूसरी ओर से चलने के बारे में सोचा, तो वह तितली पीछे हट गई और कीचड़ के पीछे की तरफ जाकर बैठ गई। वहीं, एक और तितली पड़ी थी, जो घायल थी। कोई उसके पंख तोड़कर चला गया था और वह अंतिम सासें गिन रही थी। शायद इसीलिए दूसरी तितली उस पर बार-बार हमला कर रही थी कि वह आगे न जाए और उसके पैर गलती से भी उस जख्मी तितली पर न पड़ जाएं। इतनी नन्ही-सी तितली इंसान से भी सिर्फ इसलिए टकरा गई कि शायद उसे उस जख्मी तितली के साथ कुछ पल और बिताने के लिए मिल जाएं। उस नन्ही तितली ने उसे सिखा दिया कि चुनौती चाहे कितनी भी बड़ी हो, उसका मुकाबला करना चाहिए।

अपने हित के लिए किसी से भी टकराने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

खुली खिड़की

कच्चे तेल की औसत कीमत

एक समय था, जब कच्चे तेल की औसत कीमत मात्र 1.6 डॉलर प्रति बैरल थी, जो 2012 में बढ़कर 109.4 डॉलर हो गई। फिलहाल अब उसकी कीमत 64.4 डॉलर प्रति बैरल हो गई है।

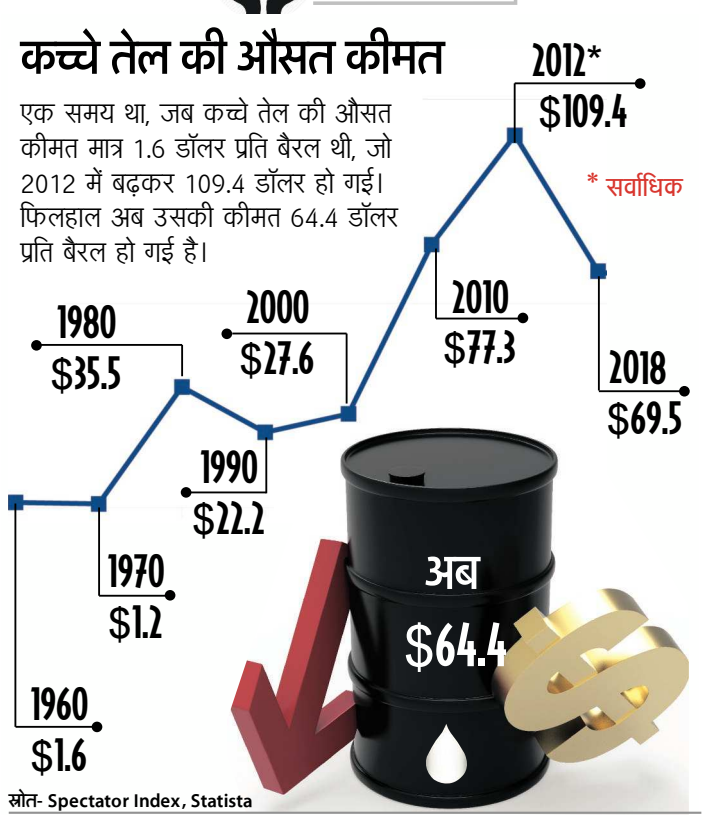

स्रोत- Spectator Index, Statista

सत्संग

तीनों लोकों से बढ़कर

रावण का वध कर लंका विजय के बाद श्रीराम को विभीषण का राजतिलक कर उन्हें लंका के सिंहासन पर आरूढ़ करना था। इस काम के लिए उन्होंने लक्ष्मण को चुना। श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण लंका गए। राजधानी में प्रवेश करते ही वह मंत्रमुग्ध रह गए। वहां के हरे-भरे वृक्ष, सुंदर पुष्पों और लताओं से आच्छादित बगीचे, कल-कल बहते जल प्रपात, पक्षियों का मनमोहक कलरव और ऊंचे सुंदर मनमोहक भवनों को देखकर लक्ष्मण का मन बहुत प्रसन्न हो गया।

उन्होंने विभीषण का राज्याभिषेक किया और फिर लौटकर राम से कहने लगे, भैया, लंका के सौंदर्य ने मेरा मन चुरा लिया है। यह नगरी स्वर्ग जैसी है। आपकी आज्ञा हो, तो मैं यहीं रुक जाऊं। श्रीराम ने उनकी बात सुनकर कहा, लक्ष्मण, इसमें कोई संदेह नहीं कि लंका का सौंदर्य निराला है। यह सचमुच स्वर्ग जैसी नगरी है। लेकिन हमेशा यह याद रखना कि सौंदर्य, समृद्धि और वैभव से परिपूर्ण होने के बावजूद लंका कभी भी अयोध्या की बराबरी नहीं कर सकती, क्योंकि वह हमारी जन्मभूमि है। जहां व्यक्ति जन्म लेता है, वहां की मिट्टी जैसा आनंद कोई अन्य भूमि नहीं दे सकती, इसलिए हमारी अयोध्या तीनों लोकों से बढ़कर है। यह सुनते ही लक्ष्मण की आंखों से लंका का मायाजाल हट गया। वह समझ गए कि जन्मभूमि के प्रति मन में हमेशा श्रद्धा भाव रहना चाहिए।

-संकलित